Dr.Raman Kumar thakur

Assistant professor (Guest)Department of Economics D.B.College Jaynagar.Madhubani.

Class:-B.A. part-1(Hons.)Paper-1st.

Date:- 24.08.2020.

Lecture n.-26.

Topic:- " अल्पाधिकार" :-विंकुचित मांग वक्र विश्लेषण .

(Oligopoly :-kinked Demand curve Analysis):→

* **अल्पाधिकार बाजार की वह अवस्था है, जिसमें कुछ गिनी - चुनी फर्म बाजार में किसी वस्तु के संपूर्ण उत्पादन की पूर्ति करती हैं। तथा कुछ थोड़े से विक्रेताओं व उत्पादकों के बीच प्रतियोगिता पाई जाती है। इस बाजार में प्रतियोगी फर्मों की संख्या इतनी कम होती है कि प्रत्येक फॉर्म की कीमत व उत्पादन संबंधी नीतियाँ प्रत्यक्ष रूप से अन्य प्रतियोगियों को प्रभावित करती है। प्रत्येक उत्पादक, फर्म इस तथ्य से अवगत रहती है कि उसकी वस्तु की मांग, बिक्री की मात्रा केवल उसके द्वारा वसूल की जाने वाली कीमत पर भी निर्भर करती है ।अंग्रेजी शब्द (Oligopoly) में Oligo से तात्पर्य है अल्प और poly से तात्पर्य है -विक्रेता ।**

सरलतम रूप में यह कहा जा सकता है कि जब किसी वस्तु के दो से अधिक परंतु बहुत अधिक नहीं ,विक्रेता या उत्पादक

होते हैं तो उसे अल्फा अधिकारी उसे अल्अल्पाधिकारी बाजार की स्थिति कहा जा सकता है ।

* अल्पाधिकार की विशेषताएं :→1) विक्रेताओं की अल्प संख्या

2) प्रतीकात्मक कार्यवाही

3) विक्रय लागत

4) कीमत स्थिरता

5) मांग वक्र की अनिश्चितता।

"विंकुचित मांग वक्र(kinked Demand Curve) :→
अल्पाधिकारी उद्योगों में प्रारंभिक अवस्था में बहुत कीमत युद्ध पाया जाता है । परंतु विभिन्न अल्पाधिकारी फर्मे जैसे -जैसे परिपक्व होने लगती है वे यह अनुभव करती है कि इस कीमत प्रतियोगिता के कारण उन्हें अत्याधिक हानि उठानी पड़ती है। परिणाम स्वरूप उनमें गैर- कीमत प्रतियोगिता आरंभ हो जाती है ।प्रसिद्ध अर्थशास्त्री "स्वीजी " द्वारा प्रदत विंकुचित माँग रेखा की यह संकल्पना निम्नलिखित तीन मान्यताओं पर आधारित है:-

1). अल्पाधिकारी बाजार की समस्त फर्मे परिपक्व अवस्था में हैं। उनका व्यवहार विवेक सम्मत है

2). यदि कोई अल्पाधिकारी फर्म अपने उत्पादन की कीमत में कमी करती है तो इस बाजार में हमें सर्वप्रथम या विचार करना है कि अल्पाधिकारी का मांग वक्र क्यों विंकुचित हो जाता है।

3). यदि कोई अल्पाधिकारी फर्म अपने उत्पादन की कीमत बढ़ाती है तो बाजार की अन्य फर्मे इस नीति का अनुसरण नहीं करती ।अर्थात वे अपने उत्पादन की कीमत बढ़ाने के प्रति तत्पर नहीं होता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि विंकुचित मांग वक्र विश्लेषण की सहायता से अल्पाधिकारी बाजार में कीमत में पाई जाने वाली स्थिरता की व्याख्या की जा सकती है । इस विश्लेषण से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि बाजार में वस्तु की कीमत बिंदु द्वारा प्रदर्शित वस्तुएं स्थिर रहती है परंतु इस विश्लेषण की सहायता से यह स्पष्ट नहीं किया जा सकता है कि अल्पाधिकारी बाजार में कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है । अतः विंकुचित मांग वक्र विश्लेषण अल्पाधिकारी बाजार में कीमत निर्धारण की व्याख्या नही करता है।वरण इस बाजार में पाई जाने वाली कीमत स्थिरता की व्याख्या करता है ।